

केरल हिन्दी रीडर

2

केरल सरकार केलिए
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास द्वारा
लिखित

१९६१

केरल हिन्दी रीडर – २

KERALA HINDI READER – 2



केरल सरकार केलिए

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास द्वारा लिखित

Price: 75 nP.

इस पुस्तक के बारे में

'केरल हिन्दी रीडर' माला की यह दूसरी रीडर है । यह केरल राज्य के स्कूलों में हिन्दी की पढ़ाई के लिए पाठचक्रम के अनुसार खास तौर पर लिखी गयी है ।

इस पुस्तक के लिखने में सावधानी से चुने हुए शब्दों की सहायता से एक सरल व्याकरण-प्रणाली का अनुसरण किया गया है । निर्दिष्ट विषयों पर आसान पाठ बड़े ही रोचक ढंग से तैयार किये गये हैं । हर एक पाठ के अंत में नमूने के तौर पर अभ्यास-पाठ भी दिये गये हैं ।

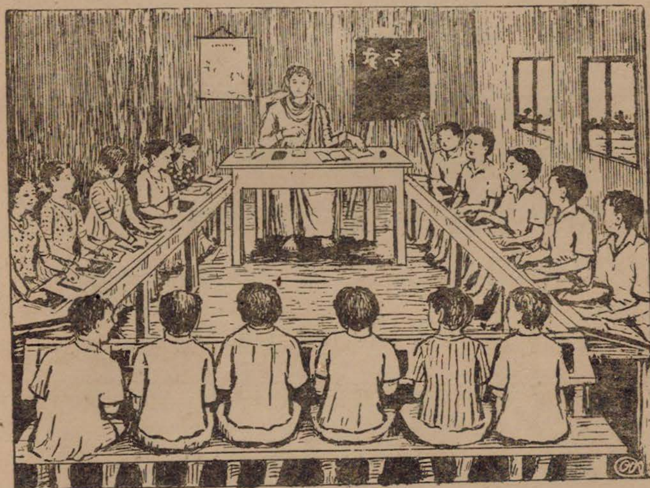
शिक्षाविभाग,
केरल सरकार.

राष्ट्र-वंदना

जन गण मन अधिनायक जय हे,
भारत भाग्य विधाता !
पंजाब सिंध गुजरात मराठा
द्राविड़ उत्कल वंगा,
विन्ध्य हिमाचल यमुना गंगा,
उच्छल जलधि-तरंगा ;
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मागे ;
गाहे तव जय गाथा,
जन गण मंगलदायक जय हे,
भारत भाग्य विधाता,
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे !

केरल हिन्दी रीडर—२

पाठ एक (१)



यह हमारा स्कूल है ।

इस स्कूल का नाम गाँधी हाई स्कूल है ।

हमारा स्कूल सबेरे नौ बजे खुलता है ।

यह शाम को साढ़े चार-बजे बंद होता है ।

इस स्कूल में आठ सौ लड़के पढ़ते हैं ।

करीब दो सौ लड़कियाँ भी पढ़ती हैं ।

स्कूल में चालीस अध्यापक काम करते हैं ।

रामू तीसरे दर्जे का विद्यार्थी है ।

उस दर्जे में पैंतीस विद्यार्थी हैं ।

वे सब हिन्दी सीखते हैं ।

माधवन नायर जी उन को हिन्दी सिखाते हैं ।

वे विद्यार्थी अंग्रेज़ी भी सीखते हैं ।

तीसरे दर्जे में कुछ लड़कियाँ भी हिन्दी सीखती हैं ।

लड़कियाँ दायीं ओर बैठती हैं ।

लड़के बायीं ओर बैठते हैं ।

अध्यापक कुरसी पर बैठते हैं ।

विद्यार्थी बेंच पर बैठते हैं ।

अध्यापक के सामने मेज़ है ।

उनकी बायीं ओर बोर्ड है ।

स्कूल के पीछे एक मैदान है ।

स्कूल के सामने एक बगीचा भी है ।

बगीचे में कई पेड़-पौधे हैं ।
लड़कियाँ पौधों को सींचती हैं ।
स्कूल का अहाता बहुत बड़ा है ।
स्कूल के प्रधान अध्यापक अच्छे आदमी हैं ।
वे विद्यार्थियों को बहुत प्यार करते हैं ।

अभ्यास

अर्थ लिखो--

दायीं	बायीं	सामने
पीछे	ओर	साढ़े चार
प्यार कर	पेड़-पौधे	सींच

ज़वाब दो--

१. दर्जे में कितने विद्यार्थी पढ़ते हैं ?
२. माधवन नायर जी क्या करते हैं ?
३. तुम किस दर्जे में पढ़ते हो ?
४. दर्जे में क्या क्या हैं ?

पढ़ो--

दर्जा + में = दर्जे में ।
कमरा + में = कमरे में ।
लड़का + को = लड़के को ।

पाठ दो (२)

रहीम, तुम क्या कर रहे हो? मैं सबक सीख रहा हूँ।



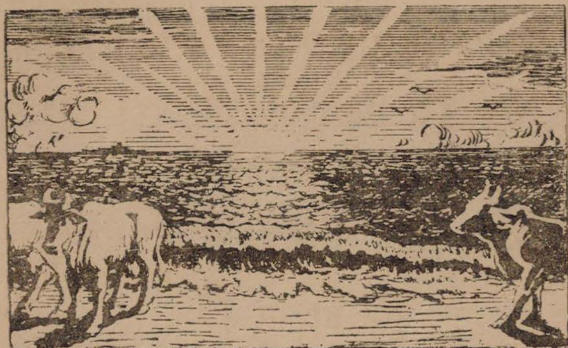
वसन्ता क्या कर रही है ?
वह पाठ लिख रही है।

राधा क्या कर रही है ? वह भी कुछ लिख रही है।
वह क्या लिख रही है ? वह हिन्दी के पाठ लिख रही है।

तुम्हारी बहन क्या कर रही है ?
वह गा रही है।



तुम्हारा भाई क्या पढ़ रहा है ?
मेरा भाई अंग्रेज़ी पढ़ रहा है।
उसको अंग्रेज़ी कौन पढ़ाते हैं ?
उसको राघवन जी अंग्रेज़ी पढ़ाते हैं।



अब शाम हो रही है ।

सूरज डूब रहा है ।

गायें घर लौट रही हैं ।

लड़के घर जा रहे हैं ।

कुछ लड़के मैदान में खेल रहे हैं ।

वे गेंद के पीछे दौड़ रहे हैं ।

वह सिनेमा देखने जा रहा है ।

खदीजा बाज़ार से आ रही है ।

लड़कियाँ कपड़ा सी रही हैं ।

———

पाठ तीन (३)

रहीम अच्छा लड़का है ।

राजू बुरा लड़का है ।

खदीजा अच्छी लड़की है ।

रहीम हमेशा साफ़ रहता है ।

वह सदा सच बोलता है ।

राजू हमेशा गंदा रहता है ।

वह हमेशा झूठ बोलता है ।

रहीम साफ़ कपड़े पहनता है ।

वह रोज़ नहाता है, इसलिये वह तन्दुरुस्त रहता है ।

राजू मैले कपड़े पहनता है ।

वह रोज़ नहीं नहाता, इसलिये वह बीमार रहता है ।

गंदगी से बीमारी होती है, सफ़ाई से बीमारी नहीं होती ।

अभ्यास

जवाब दो—

१. राजू कैसा लड़का है ?
२. रहीम कैसा लड़का है ?
३. रहीम क्यों तन्दुरुस्त रहता है ?
४. कौन बीमार पड़ता है ?

पढ़ो—

बुरा-बुराई	साफ़-सफ़ाई
गंदा-गंदगी	बीमार-बीमारी
तन्दुरुस्त-तन्दुरुस्ती	कमज़ोर-कमज़ोरी
सच-सच्चा	झूठ-झूठा
मैल-मैला	

पाठ चार (४)



कल इतवार था । कल छुट्टी का दिन था । कल शाम को हम 'बीच' पर गये । समुद्र के किनारे बड़ा रेतीला मैदान है । शाम को 'बीच' पर बड़ी भीड़ थी । लोग दूर दूर से आ रहे थे । कुछ लोग मोटरों में आ रहे थे । और कुछ लोग पैदल आ रहे थे । ये सब 'बीच' पर हवा खाने आ रहे थे । वहाँ की हवा हमको बहुत पसंद आती थी । उस से दिन भर की थकावट दूर हो जाती थी । छोटे लड़के बालू पर दौड़ रहे थे । छोटी लड़कियाँ कबड्डी

खेल रही थीं। एक आदमी मिठाई बेच रहा था। दूसरा फल बेच रहा था। एक जगह पर सभा हो रही थी। एक आदमी सभा में बोल रहा था। बहुत लोग गौर से सुन रहे थे। कुछ लोग रेडियो भी सुन रहे थे। कुछ लड़के पानी में तैर रहे थे। अब अंधेरा हो गया और सब लोग घर लौटे।

अभ्यास

जवाब दो—

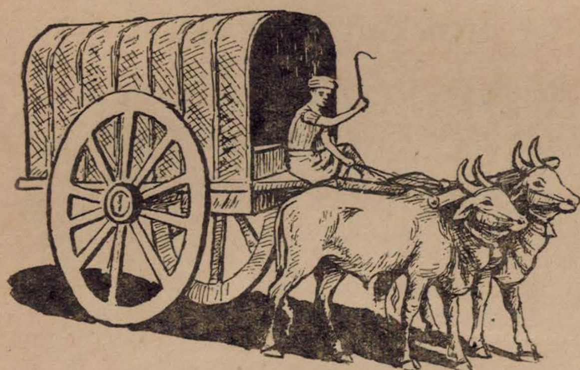
१. कल क्यों छुट्टी का दिन था ?
२. लोग कैसे 'बीच' पर आ रहे थे ?
३. 'बीच' पर लड़के क्या कर रहे थे ?
४. लोग क्यों 'बीच' से घर लौटे ?
५. सभा में क्या हो रहा था ?

अर्थ बताओ—

आज	कल	अभी	दौड़
बेच	सुन	खेल	अंधेरा
पैदल	आठ	कबड्डी	रेतीला

———

पाठ पाँच (५)



यह चित्र किसका है ?

यह बैल-गाड़ी का चित्र है ।

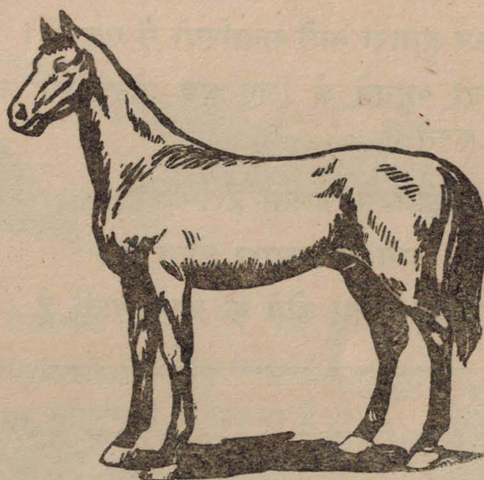
हमारा देश किसानों का है ।

बैल-गाड़ी उन की सवारी है ।

वह बोझा ढोने के काम भी आती है ।

बैल खेत जोतता है और गाड़ी खींचता है ;

इसलिए किसान बैल को पालता है ।



घोड़ा भी एक उपयोगी जानवर है।

वह भी गाड़ी खींचता है और वह तेज़ दौड़ता है।

हम घोड़े पर सवारी करते हैं।

हाथी भी बड़ा उपयोगी जानवर है।

पहले राजा लोग हाथी पर सवारी करते थे।

लोग उसे इज्ज़त की सवारी मानते हैं।

आजकल हाथी दक्खिन के मंदिरों में पाले जाते हैं

वे लकड़ी के बड़े बड़े लट्ठे उठाते हैं।

61|4688

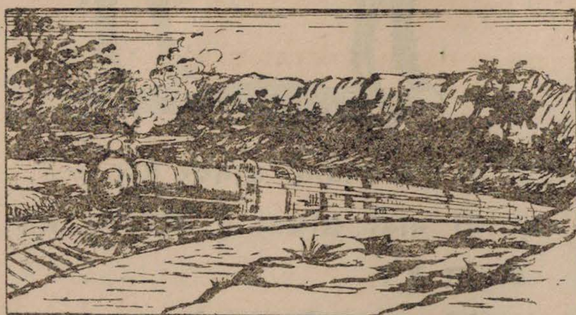
मोटर हमारी नयी सवारियों में एक है।

जल्दी पहुँचने के लिए हम मोटर का उपयोग करते हैं।

यह पेट्रोल से चलती है।

इसका दाम भी ज्यादा होता है।

लारियाँ बोझा ढोने के काम आती हैं।



रेलगाड़ी के सफ़र में हमें ज्यादा आराम मिलता है।

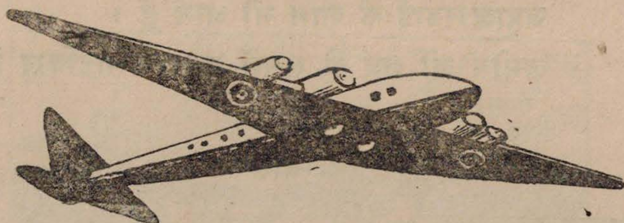
यह तेज चलती है।

यह भाप से चलती है।

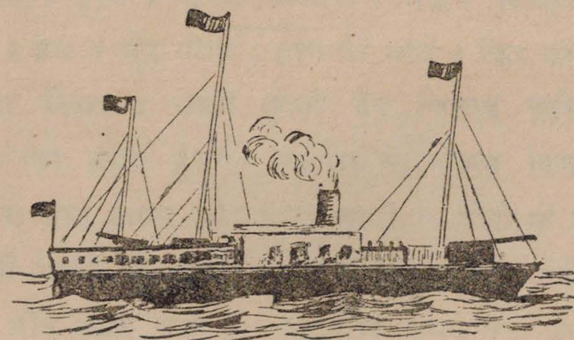
इस के कई डब्बे होते हैं।

माल ढोने की रेलगाड़ी भी अलग होती है।

उसे मालगाड़ी कहते हैं।



आजकल लोग दूर का सफ़र हवाईजहाज़ से करते हैं ।
यह आसमान में उड़ता है ।
अब तो इस में डाक भी जाती है ।



समुद्र में बड़े बड़े जहाज़ भी चलते हैं ।
इन में भी लोग दूर की यात्रा करते हैं
इन से व्यापार भी खूब बढ़ गया है ।

जहाज़ लड़ाई के काम भी आते हैं ।
ज़मीन की सब से सस्ती सवारी साईकिल है ।

अभ्यास

जवाब दो—

१. बैल क्या करता है ?
२. हम घोड़े पर क्या करते हैं ?
३ हथी क्या करता है ?

———

पाठ छः (६)



सबेरा हुआ। सूरज निकला। मोहन बिस्तर से उठा। उस ने मुंह धोया ; हाथ-पैर धोये। फिर उस ने नाश्ता किया। उसने थोड़ी देर किताब पढ़ी। स्कूल का समय हुआ। तब उस ने भोजन किया। उस ने भात खाया और रोटी खायी। रोटी के साथ उस ने भाजी भी खायी। उस ने किताब की थैली ली और स्कूल चला। वह ठीक समय पर स्कूल पहुँचा। वहाँ उस ने चार बजे तक पढ़ा। फिर वह खेल के मैदान में गया। वहाँ उस ने डेढ़ घंटे तक गेंद खेला। शाम हुई और अंधेरा हुआ। तब वह

घर वापस आया । थोड़ी देर के बाद उस ने खाना खाया और थोड़ी देर पढ़ा । उस के बाद नौ बजे सोया ।

अभ्यास

ज ाब दो—

१. मोहन कब बिस्तर से उठा ?
२. सबेरे उस ने क्या किया ?
३. उस ने क्या क्या खाया ?
४. वह क्या ले कर स्कूल चला ?
५. मोहन ने शाम को घर आकर क्या किया ?
६ तुम सबेरे से शाम तक क्या क्या करते हो ?

--- -

पाठ सात (७)

नदी

मास्टर—लड़को, भारत देश के नक्शे में नदियां कहाँ कहाँ हैं, तुम दिखाओगे ?

लड़के —जी हाँ, हम लोग सभी नदियाँ दिखायेंगे।

मास्टर—गोपालन, तुम गंगा, सिंधु आदि नदियाँ दिखाओ।

गोपालन—मास्टर जी, ऊपर गंगा नदी है, सिंधु और ब्रह्मपुत्र भी हैं।

मास्टर—हाँ, ये सब उत्तर भारत की नदियां है। अब दक्षिण भारत की नदियाँ दिखाओ, माधवन।

माधवन—यहाँ गोदावरी है। यहाँ कृष्णा है, इस तरफ कावेरी है। नीचे यहाँ पम्पा है। यहाँ पेरियार है। पम्पा और पेरियार केरल की नदियाँ हैं।

मास्टर—ठीक है, अब बताओ, नदियों से क्या क्या लाभ होते हैं ?

माधवन—नदियों में खूब पानी बहता है। हम नदी का पानी पीते हैं। हम नदी में स्नान भी करते हैं।

मास्टर---किसान लोग नदियों के पानी से खेतों को सींचते हैं। नदियों में नावें चलती हैं। उन से व्यापार होता है। नदी के पानी से बिजली भी पैदा करते हैं। नदियों के किनारों पर बडे बड़े शहर बसे हैं।

शशी--- लोग नदी से मच्छली भी पकड़ते हैं।

मास्टर---हाँ; यह भी एक लाभ है। नदियों से हमको कई लाभ होते हैं। नदियों का पानी खेतो के लिए बहुत उपयोगी होता है।

अभ्यास

जवाब दो---

१. उत्तर भारत की नदियाँ कौन कौन-सी हैं ?

२. दक्षिण भारत की कुछ नदियों के नाम बताओ।

३. नदियों से व्यापार कैसे होता है ?

४. नदियों से क्या क्या लाभ होते हैं ?

अर्थ बताओ---

तरफ़	बहता है	खूब	सींचते हैं
नावें	बिजली	अनाज	स्नान करना

पाठ आठ (८)

गोपी — शशी कहाँ गया है ?

बाबू — वह बाज़ार की तरफ़ गया है ।

गोपी—वह बाज़ार क्यों गया है ?

बाबू—आज हमारा नौकर नहीं आया है । इसलिए वह तरकारी लाने खुद गया है ।

गोपी—सरला कहाँ गयी है ?

बाबू—आज वह मौसी के यहाँ गयी है ।

गोपी—वह मौसी के यहाँ क्यों गयी है ?

बाबू—आज मौसी के यहाँ दावत है ।

गोपी—तुम्हारे मामाजी आजकल कहाँ रहते हैं ?

बाबू—मेरे मामा आजकल पालक्काट में रहते हैं ।

गोपी—क्या वे यहाँ नहीं आते ?

बाबू—मैं उनको देखना चाहता हूँ । वे तो अक्सर यहाँ आते हैं ।

गोपी—रामू, तुम ने आज बाज़ार से क्या खरीदा है ?

बाबू—आज मैं ने एक क़लम खरीदी है ।

गोपी—तुम ने उस के लिए कितने रुपये दिये ?

बाबू—मैं ने उस के लिए तीन रुपये दिये ।

गोपी—तुमने यह क़लम किस के लिए खरीदी है ?

बाबू—मैं ने यह क़लम सरला के लिए खरीदी है ।

गोपी—तुम ने और क्या क्या चीज़ें खरीदीं ?

बाबू—मैं ने कुछ मेवे, साबुन, तेल, और कपड़े खरीदे ।

अभ्यास

जवाब दो—

१. शशी बाज़ार क्यों गया है ?

२. रामू ने क्या खरीदा है ?

३. कलम कहाँ मिलती है ?

सीखो—

साबुन बाज़ार दावत कलम ।

पाठ नौ (९)

सिनेमा

शशी—गोपी ! जानते हो, मैं कल शाम को एक सिनेमा देखने गया था ।

गोपी—चित्र का क्या नाम है ?

शशी—उस चित्र का नाम 'नल-दमयंती' है ।

गोपी—तुम किस के साथ गये ?

शशी—मैं अपने मामा के साथ गया । शाम को ठीक छः बजे हम दोनों सिनेमा-घर पहुंचे, दो टिकट लिये और अन्दर गये । साढ़े छः बजे सिनेमा शुरू हुआ ।

गोपी—क्या, सिनेमा बहुत अच्छा था ?

शशी—हाँ, बहुत अच्छा था । कहानी नल-दमयंती की थी । उनको बहुत कष्ट हुए । क्या तुमको उन की कहानी मालूम है ?

गोपी—हाँ, मैं ने यह कहानी एक बार पढ़ी है । सिनेमा कितने बजे खतम हुआ और तुम कितने बजे घर लौटे ?

शशी—वह रात को साढ़े नौ बजे खतम हुआ । उसको बाद हम पौने दस बजे घर वापस आये।

गोपी—क्या, तुम कल भी सिनेमा जाओगे ?

शशी—नहीं, कल मेरा भाई जायगा, तुम उसके साथ जाओ ।

गोपी—अच्छा, मैं तुम्हारे भाई के साथ जाऊँगा ।

अभ्यास

जवाब दो—

१. सिनेमा के बारे में गोपी ने क्या कहा ?
२. शशी ने उस से क्या पूछा ?
३. सिनेमा कितने बजे शुरू हुआ और कितने बजे खतम हुआ ?

पाठ दस (१०)

रेलवे स्टेशन



यह रेलवे स्टेशन है। राम अपने मामा के घर जा रहा है। उसके हाथ में एक थैली है। राम प्लाटफारम पर है। उसके पास एक बिस्तर और एक पेटी भी हैं। मोहन ने राम के लिए टिकट खरीदा। उस ने अपने लिए एक प्लाटफारम टिकट भी खरीदा। दोनों प्लाटफारम पर चले गये। गाड़ी अब तक नहीं आयी। दोनों बेंच पर बैठे। प्लाटफारम पर एक लड़का अखबार बेच रहा है। फलवाला कुछ फल लाता है। राम ने अखबार ख़रीदा।

मोहन ने कुछ फल खरीदे। इतने में गाड़ी आयी! राम डब्बे में बैठा। थोड़ी देर में घंटी बजी। गार्ड ने हरा झंडा दिखाया। तब मोहन ने राम से नमस्ते कहा। गाड़ी नौ बजे रवाना हुई। गाड़ी चली और मोहन घर लौटा।

अभ्यास

जवाब दो--

१. राम और मोहन ने प्लाटफारम में क्या क्या खरीदे ?

२. राम डब्बे में बैठा, फिर क्या हुआ ?

सीखो--

अखबार देर डब्बा रवाना हो
लौट बिस्तर घंटी बज।

पाठ ग्यारह (११)

मैसूर यात्रा

कमला—विमला, तुम पिछली छुट्टी में कहाँ गयी थीं ?

विमला—मैं मैसूर गयी थी ।

कमला—तुम मैसूर में कहाँ ठहरी थीं ?

विमला—मैं अपने चाचा के यहाँ ठहरी थी ।

कमला—मैसूर कैसा शहर है ?

विमला—मैसूर बड़ा शहर है ; और सुन्दर भी है ।

कमला—वहाँ तुम ने क्या क्या देखा ?

विमला—मैं ने वहाँ महाराजा के बड़े बड़े महल देखें ।

कमला—अच्छा, तुम ने वृन्दावन देखा ?

वमला—हाँ ; मैं वहाँ भी गयी थी । वृन्दावन सचमुच बहुत ही सुन्दर है ।

कमला—वृन्दावन मैसूर से कितनी दूर है ?

विमला—मैसूर से ग्यारह मील दूर है ।

कमला—चामुंडी पहाड़ कहाँ है ?

विमला—चामुंडी पहाड़ शहर के पास ही है । पहाड़ पर चामुंडी देवी का मंदिर है । वह मंदिर भी बहुत सुन्दर है ।

कमला—महाराजा का महल कैसा है?

विमला—नवरात्रि का समय था। महाराजा का महल दीपों से सजा था। रात के समय वह बहुत सुन्दर था।

कमला—अगले साल मैं भी तुम्हारे साथ मैसूर आऊँगी।

विमला—हाँ हाँ, ज़रूर आना।

अभ्यास

जवाब दो—

१. विमला छुट्टी में कहाँ गयी थी?
२. मैसूर कैसा शहर है?
३. विमला ने वहाँ क्या क्या देखा?
४. वृन्दावन कहाँ है?
५. महाराजा का महल कैसा था?
६. चामुंडी पहाड़ कहाँ है?

अर्थ बताओ—

अगले साल	पहाड़	मंदिर
सज	ज़रूर	सचमुच

———

पाठ बारह (१२)

नया नक्शा

अध्यापक---रहीम ! वहाँ देखो, दीवार पर क्या है ?

रहीम---दीवार पर भारत का नक्शा है ।

हरिदास---अध्यापक जी, यह तो भारत का नया नक्शा है न ?

अध्यापक---हाँ, यह भारत का नया नक्शा है ।

केशव---नया नक्शा क्यों बना है ?

अध्यापक---पहले भारत में कई राज्य थे । अब छोटे छोटे राज्य मिल कर नये राज्य बने हैं । यह नये राज्यों का नक्शा है ।

कमला---मास्टरजी, अब हमारे देश में कितने राज्य हैं ?

अध्यापक---हमारे देश में चौदह राज्य हैं ।

रहीम---मास्टर जी, इनको नये राज्य क्यों कहते हैं ? क्या, ये राज्य पहले नहीं थे ?

अध्यापक---अब ये सब भाषावार राज्य हैं । एक एक भाषा बोलनेवालों का राज्य अलग अलग है । हमारे राज्य का नाम केरल है ।

रवी---मास्टर जी, मेरे मामा कोच्चि में रहते हैं । कोच्चि किस राज्य में है ?

61|4688

अध्यापक--वह केरल में है। अच्छा, तुम बताओ विमला, नेल्लूर किस राज्य में है?

विमला--नेल्लूर आन्ध्र राज्य में है।

अध्यापक--बेंगलूर कहाँ है।

विमला--बेंगलूर कर्नाटक राज्य में है।

अध्यापक--नहीं, उस ो कर्नाटक राज्य नहीं कहते। उसको मैसूर राज्य कहते हैं।

अध्यापक--अब दक्षिण के राज्यों के नाम बताओ।

विमला--मद्रास, आन्ध्र, केरल और मैसूर ये चारों दक्षिण के राज्य हैं।

अध्यापक—केरल राज्य की राजधानी का क्या नाम है?

विमला केरल राज्य की राजधानी का नाम तिरुवनन्तपुरम हैं।

अभ्यास

सीखो—

नक्शा	भाषावार	अलग
मिलकर	बने हैं	बता।

पाठ तेरह (१३)

पंडित मोतीलाल जी



पंडित मोतीलाल नेहरू हमारे देश के बड़े नेता थे। वे पंडित जवाहरलाल नेहरू के पिता थे। वे प्रयाग के प्रसिद्ध वकील थे। उन्हों ने बहुत रुपया कमाया। वे राजा-रईसों की तरह रहते थे।

मोतीलाल जी देश को बहुत प्यार करते थे । इसलिए वे कांग्रेस में शामिल हुए । उन्हों ने अपना सब सुख छोड़ दिया । फिर वे सादगी से रहने लगे । उन्हों ने महीन वस्त्र छोड़ दिया और मोटा खद्दर पहना । सिर पर गांधी टोपी लगा ली । अपना बड़ा महल "स्वराज्य भवन" उन्हों नें कांग्रेस को दान दे दिया ।

मोतीलाल कई बार जेल भी गये । उन्हों ने देश की बड़ी सेवा की है । वे हमेशा गाँधी के साथ रहते थे और उन के काम में मदद देते थे ।

पंडित जवाहरलाल भी कांग्रेस में शामिल हुए । वे भी कई बार जेल गये । मोतीलाल जी अब नहीं है । जवाहरलाल जी अब क्या करते हैं, तुम को मालूम है ? वे ही आजकल हमारे प्रधान मंत्री हैं । वे देश केलिए दिन-रात मेहनत करते हैं ।

अभ्यास

जवाब दो--

१. मोतीलाल नेहरू कौन थे ?

२. वे क्यों कांग्रेस में शामिल हुए ?

३. जवाहरलाल जी के बारे में तुम क्या जानते हो ?

पाठ चौदह (१४)

व्यापारी और घोड़ा



एक व्यापारी के पास एक घोड़ा था। वह उस पर नमक लादकर बाज़ार ले गया। रास्ते में एक नदी थी। घोड़ा नदी में गिर पड़ा। सारा नमक पानी में गल गया। घोड़ा फिर उठा, तब पीठ पर बोझ नहीं था। घोड़े ने सोचा "अच्छा, मैं रोज ऐसा ही करूँगा। मेरा बोझ रोज़ हलका हो जायगा।"

दूसरे दिन व्यापारी फिर बाज़ार गया। घोड़ा उस दिन भी पानी में गिरा। तब नमक गल गया। घोड़े ने तीन चार दिन ऐसा ही किया। व्यापारी को बड़ा नुक्सान हुआ।

एक दिन व्यापारी ने सोचा "इस घोड़े को दंड दूँगा" । उस ने घोड़े पर रूई लादी और बाज़ार ले गया। घोड़ा फिर पानी में गिरा । वह उठा तो रूई पानी से भारी हो गयी । घोड़े की पीठ पर बहुत बोझ हो गया । घोड़े को अच्छा दंड मिला । वह बहुत पछताया ।

अभ्यास

जवाब दो—

१. जब घोड़ा नदी में गिर पड़ा तब क्या हुआ ?

२. घोड़े ने क्या सोचा ?

३. व्यापारी को क्या नुक्सान हुआ ?

४. व्यापारी ने क्या सोचा और क्या किया ?

५. घोड़े को क्या दंड मिला ?

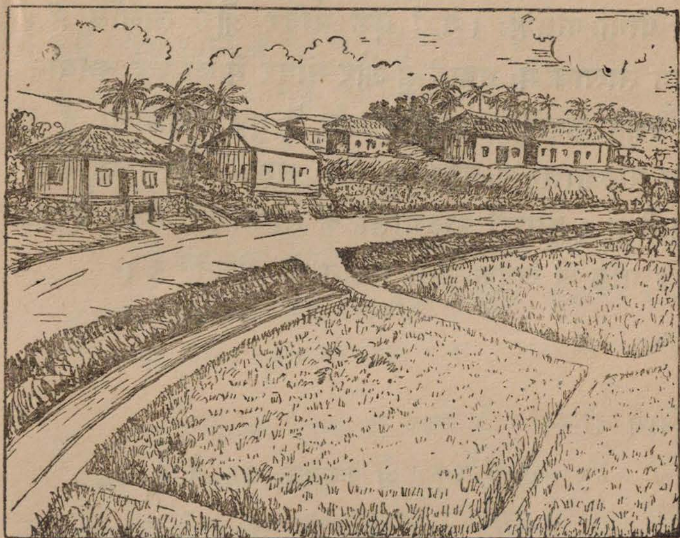
६. वाक्यों में प्रयोग करो :—

लादना, हल्का, दंड देना,
गलना, भारी, पछताना ।

७. व्यापारी और घोड़े की कहानी अपने वाक्यों में लिखो ।

पाठ पन्द्रह (१५)

गाँव



यह हमारा गांव है । उसका नाम रामपुरम है । वह केरल में है । हमारे गाँव में बहुत से घर हैं । उन में कुछ छोटे और कुछ बड़े हैं । छोटे घर किसानों के हैं । हमारे गांव के लोगों में किसानों की संख्या अधिक है । वे खेतों में काम करते हैं । हमारे यहाँ धान के खेत हैं । यहाँ नारियल, आम, और केले के कुछ बगीचे भी हैं । हमारे गांव के लोग बहुत साफ़-सुथरे रहते हैं । वे अपने

घर भी साफ़-सुथरे रखते हैं। हमारे गाँव में एक चौड़ी सड़क है। सड़क के दोनों किनारे कई छोटे-बड़े सुन्दर मकान हैं। गाँव में कई कुएँ भी हैं। गाँव के लोग कुओं का पानी पीते हैं। यहाँ एक मंदिर और तालाब हैं। लोग तालाब में नहाते हैं और मंदिर में जा कर भगवान के दर्शन करते हैं। हमारे गाँव में एक पाठशाला है। उस पाठशाला में गाँव के सब लड़के और लड़कियाँ पढ़ती हैं। हमारी पाठशाला के सामने ही बड़ा मैदान है। गाँव के लड़के उसी मैदान में खेलते हैं।

अभ्यास

जवाब दो—

१. तुम्हारे गाँव में कितने घर हैं?
२. किसान क्या काम करते हैं?
३. पाठशाला में कौन पढ़ते हैं?
४. केरल में किस फल के पेड़ बहुत होते हैं?
५. व्यापारी लोग क्या काम करते हैं?

———

पाठ सोलह (१६)

हरि का चाचा

आज हरी के चाचा गाँव से आये हैं । वे अपने साथ कई चीजें लाये हैं । वे आम और नारियल लाये हैं । वे मूंगफली और गुड़ भी लाये हैं । हरी के चाचा एक किसान हैं । गाँव में उन के कई खेत हैं । आज हरि की वर्ष-गाँठ है । इसलिए चाचा आये हैं ।

शाम को चाचा हरि को बाज़ार ले गये । बाज़ार में चाचा ने हरि के लिए एक सुंन्दर बाजा खरीदा । उन्होंने हरि की छोटी बहन के लिए एक गुड़िया भी खरीदा ।

चाचा पिछले साल भी आये थे । तब भी वे हरि के लिए कई चीजें लाये थे । तब वे कटहल भी लाये थे । पिछले साल भी चाचा ने बच्चों केलिए खिलौने खरीदे थे। चाचा ने एक रेशमी कुरता हरि को दिया था । हरि की बहन तब छोटी बच्ची थी ।

हरि छुट्टी में गाँव जाता है । वहाँ वह खूब खेलता है । कभी कभी हरि चाचा के साथ खेत में जाता है । छुट्टी के बाद हरि गाँव से वापस आता है । चाचा हरि को बहुत प्यार करते हैं ।

अभ्यास

जवाब दो--

१. हरि के चाचा किसलिये हरि के यहाँ आये ?
२. वे अपने साथ क्या क्या लाये ?
३. पिछले साल उन्हों ने बच्चों को क्या दिया था ?
४. हरि कब गाँव जाता है और कब वापस आता है ?

पाठ सत्रह (१७)

गाँधी जी की प्रतिज्ञा



महात्मा गाँधी जी में एक बहुत बड़ा गुण था। वे जो कुछ गलती करते थे उसे वे स्वीकार कर लेते थे। क्या, तुम को मालूम है कि उन में यह गुण कैसे आया? गाँधी जी जब बारह-तेरह साल के लड़के थे, तब कुछ बुरे लड़कों के साथ मिल गये। वे भी तमाखू पीने लगे। लेकिन इस के लिए पैसा कौन देगा? पिता जी या माताजी इस के लिए पैसे कैसे देंगी? गाँधीजी इधर-उधर से पैसे

चुराने लगे । लेकिन यह काफ़ी नहीं होता था । वे कर्ज भी लेने लगे । दूकान में कर्ज़ बढ़ गया ।

गाँधीजी के भाई और मित्र भी इस में शामिल थे । भाई ने गाँधी जी से कहा "तुम्हारे हाथ में कंगन है, उस में से एक तोला-भर सोना काट कर दो ।" गाँधीजी ने ऐसा ही किया ।

गाँधीजी कर्ज से छूट गये । लेकिन उनके मन में यह बात बैठ गयी कि मैं ने एक बड़ा अपराध किया है । यह विचार उसके दिल को दिन-रात सताता रहा । इसलिए वे बहुत उदास रहने लगे । जब उन से रहा नहीं गया तब उन्हों ने सारा हाल एक चिट्ठी में लिखा और अपने पिता को वह चिट्ठी दे दी ।

गाँधी जी के पिता सब हाल जान कर पहले बहुत दुखी हुए । पीछे वे यह देख कर खुश हुए कि मेरा बेटा अपनी गलती स्वीकार कर रहा है । आगे चल कर यह बड़ा आदमी बनेगा । उन्होंने गाँधीजी को आशीर्वाद दिया । उसी वक्त गाँधी जी ने प्रतिज्ञा की कि

अब मैं कभी झूठ नहीं बोलूंगा ; हमेशा अपनी गलती स्वीकार करूँगा । तब से लेकर मरते समय तक गांधीजी अपनी इस प्रतिज्ञा पर अटल रहे ।

अभ्यास

जवाब दो--

१. गाँधी जी क्यों कर्ज़ लेने लगे ?

२. उन के भाई ने क्या कहा ?

३. गाँधी जी ने क्या अपराध किया ?

४. गाँधी जी के पिता क्यों खुश हुए ?

५ गाँधी जी ने क्या प्रतिज्ञा की ?

पाठ अठारह (१८)

सुखी कौन

एक कहावत है—'संतोषी सदा सुखी हैं' । जिस के मन में संतोष होता है वही वास्तव में सुखी है । ऐसा आदमी दूसरों को देख कर जलता नहीं, किसी चीज़ के न मिलने पर दुखी नहीं होता । जो कुछ मिलता है, उसी में वह संतोष कर लेता है ।

इस के बारे में एक कहानी है । यूनान का सम्राट सिकन्दर दिग्विजय करता हुआ भारत आया, तब उसने सिंधु नदी के किनारे एक साधु को बैठे देखा । किसी ने बताया कि यह आदमी बड़ा दार्शनिक है । सिकन्दर उसके नज़दीक गया । जाड़े के दिन थे । सबेरे का समय था । वह आदमी धूप में बैठा हुआ था । सिकन्दर के सामने आ खड़े होने से धूप ओट हो गयी । तब साधु ने सर उठा कर देखा और पूछा—"तुम कौन हो?" "मैं दुनिया को जीतनेवाला सिकन्दर हूँ ।" सिकन्दर ने गर्व से जवाब दिया ।

"अच्छा" तुम ही सिकन्दर हो ! तुम क्या चाहते हो ?" उस आदमी ने पूछा ।

सिकन्दर ने कहा—"मैं कुछ नहीं चाहता । मैं ही तुम्हें कुछ देने आया हूँ । तुम जो चाहो, माँग लो । दुनिया की कोई भी चीज़ तुम माँगो, मैं तुम्हें दे सकता हूँ ।" सिकन्दर ने सोचा था कि साधु ज़रूर मुझसे रुपये-पैसे माँगेगा । लेकिन साधु ने काह—"तुम भगवान की दी हुई धूप का रास्ता छोड़ कर अलग खड़े हो जाओ । इस के सिवा मैं और कुछ नहीं चाहता ।

यह जवाब सुन क़र सिकन्दर दंग रह गया । उसे बड़ी लज्जा भी हुई । उस ने सोचा—"मैं कैसा मूर्ख हूँ । जो ऐसे महान व्यक्ति को दान देना चाहता था । ऐसा व्यक्ति तो भगवान के सिवा दुनिया में और किसी से कुछ नहीं माँगता" । सच है , संतोषी व्यक्ति सम्राटों से भी ज्यादा खुश होता है ।

अभ्यास

जवाब दो—

१. सुखी कौन है ?

२. सिकन्दर ने सिंधु नदी के किनारे क्या देखा ?

३. सिकन्दर ने साधु से क्या पूछा ?

४. साधु ने क्या जवाब दिया ?

पाठ उन्नीस (१९)

वॉली बाल



अध्यापक—तुम लोग बैटमिंटन खेलना जानते हो न ? उसी तरह का एक नया खेल आज तुमको सिखाता हूँ ।

लड़का—उसका नाम क्या है मास्टर जी ?

अध्यापक—उसको वॉली बाल कहते हैं । बैटमिंटन की तरह उसके बीच में भी एक जाल रहता है और उसके दोनों तरफ़ खिलाड़ी खड़े होते हैं ।

लड़का—एक-एक तरफ़ कितने लड़के खेल सकते हैं; मास्टर जी?

अध्यापक—नौ-नौ। लेकिन इस खेल में बैट या डंडे वगैरह नहीं होते। उनका गेंद नहीं होता। फुटबाल से थोड़ा छोटा गेंद होता है। उसको हाथों से खेलना होता है।

लड़का—इतना बड़ा गेंद! उसको उधर फेंकना हमारी ताकत के बाहर की बात है, जी।

अध्यापक—इधर से उधर फेंकने की ज़रूरत नहीं। गेंद को दूसरे आदमी को दे दो और वह तीसरे को देगा। तीसरा लड़का जाल की दूसरी तरफ़ फेंकेगा। यह आसान काम है न?

लड़का—जी हाँ, यह तो आसान मालूम होता है। इस खेल से क्या लाभ है, मास्टर जी?

अध्यापक—फुटबाल खेलने से जितनी अच्छी कसरत होती है उतनी ही इस में भी होती है। शरीर फुरतीला और तन्दुरुस्त होता है।

लड़का—लड़कियों के स्कूल में मैं ने एक बार देखा कि वे गेंद को मारती नहीं, लेकिन फेंकती हैं।

61|4688

अध्यापक—वह भी वॉली बाल ही है। लड़कियाँ फेंकती हैं, इसलिए उसका नाम "थ्रो बाल" रखा गया है।

लड़का—उस में हार-जीत कैसे मालूम होती है ?

अध्यापक—ठीक बैडमिंटन की तरह। जिस दल को २७ (सताईस) पाइन्ट आएंगे, उसकी जीत होगी।

अभ्यास

जवाब दो—

१. वॉली बाल का गेंद कैसा होता है ?

२. उस खेल से शरीर कैसा होता है ?

३. 'थ्रो बाल' क्या है ?

४. उस में हार जीत कैसे मालूम होती है ?

---

१. सीखो।

बच्चो! मिलकर रहना सीखो
प्यार सभी को करना सीखो।

दूर बुरों से रहना सीखो,
साथ भलों का देना सीखो।

चरित बड़ों के पढ़ना सीखो,
उचित राह पर चलना सीखो॥

काम धैर्य से करना सीखो,
संकट से तुम लड़ना सीखो।

सच बोलो, सच कहना सीखो,
दुख में भी तुम हँसना सीखो।

सबका आदर करना सीखो,
तुम न किसी से डरना सीखो॥



२. मोर।

नाच रहा जंगल में मोर,
देखो, आज नदी की ओर!

अपने सारे पर फैलाकर,
अच्छे अच्छे रंग दिखा कर,

सुन-सुन कर बादल का शोर,
देखो, नाच रहा है मोर!

कितने सुन्दर पर हैं इसके!
ऐसे और भला, हैं किसके?

देखो तो तुम उसकी ओर,
सब चिडियों से सुन्दर मोर।

सब चिडियों का राजा मोर,
सुन्दर इस से कोई न और॥

---

३. मेरी मैया।

जब मैं छोटा था तब किसने
मुझ को दूध पिलाया था ?
खूब खिलौना खेल दिखा कर
मुखड़ा चूम खिलाया था ?
मेरी मैया ! मेरी मैया !

कौन मुझे पहरों छाती पर
थपकी मार सुलाती थी ?
कभी गोद में, कभी प्रेम से
झूला डाल झुलाती थी ?
मेरी मैया ! मेरी मैया !

जब मैं खड़ा न हो सकता था,
हाथ पकड़ कर खड़ा किया।
किसने इतना कष्ट उठा कर
पाल-पोस कर बड़ा किया ?
मेरी मैया ! मेरी मैया !

कौन सुना कर मुझे कहानी
सुन्दर शिक्षा देती थी ?
जब मैं रोता था, मेरी सुध
कौन दौड़कर लेती थी ?
मेरी मैया ! मेरी मैया !

किसने ऐसा प्यार किया है ?
कैसे उसे भुलाऊँगा !
जब तक जीऊँगा ; आदर से
मैं उसका गुण गाऊँगा।
मेरी मैया ! मेरी मैया !

---

४. हवाई जहाज़ ।

वह जाता है जहाज़ हवाई,
कैसा सुन्दर दिया दिखाई ।
चन्द मिनट में कोसों जाता,
सैर करा कर वापस लाता ॥

कितना ऊँचा उठता जाता,
नदी झील को पार कराता ।
सड़क गली-सी राह नहीं है,
पटरी की भी चाह नहीं है ॥

'भोंपा' 'हारन' नहीं बजाता,
'भर-भर' की आवाज़ सुनाता ।
सैर करूँगा, इस पर चढ़ कर,
मन बहलाऊँगा खुश होकर ॥

५. बादल ।

बादल ! बादल ! बरसो पानी,
आज नहायेंगे मनमानी ।
रिम-झिम बरसो,
झम-झम बरसो !
धीरे धीरे
थम-थम बरसो
जिस से हो न हमें हैरानी,
बादल ! बादल ! बरसो पानी ॥
ठण्ढ़ा ठण्ढ़ा
तन हो मेरा,
ठण्ढ़ा ठण्ढ़ा
मन हो मेरा ।
मर जाये गर्मी की नानी ।
बादल ! बादल ! बरसो पानी ॥

5[illegible]1

PRINTED BY THE S.G.P. AT THE GOVERNMENT PRESS
TRIVANDRUM, 1961.